Hindi
Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 (Print)
ISSN 2278 – 6414 (Online)
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रसाद की 'ध्रुवस्वामिनी' में स्त्री–विमर्श

• इन्द्रा सिंह • अनुपमा • प्रियंका कुमारी
• शरण सहेली

Received : November 2014
Accepted : March 2015
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : छायावादी कविता के प्रकाश स्तंभ के रूप में सुविख्यात जयशंकर प्रसाद वस्तुत: हिन्दी साहित्याकाश के दिवाकर हैं; जिन्होंने अपनी कालजयी रचनाओं से हिन्दी साहित्य में सभी विधाओं को प्रकाशित किया है। उनके साहित्य में पुरुष–दर्प से दलित नारी के सामाजिक उत्थान से संबंधित विषयों की पर्याप्त समालोचना दृष्टिगत होती है। प्रसाद ने नारी–शोषण का ऐसा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है, जो हमारे पुरुष–प्रधान समाज की नग्न सच्चाई को दर्शाता है। मुख्यत: ऐतिहासिक नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित प्रसाद के नाटकों में 'ध्रुवस्वामिनी' अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। हमने उनके नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' में स्त्री–विमर्श की प्रासंगिकता को लेकर परियोजना–कार्य तैयार किया है। इसमें विविध महाविद्यालयों की छात्राओं एवं प्राध्यापक वर्ग को लेकर प्रश्नावली तैयार की गई है, जो प्रासंगिकता के स्तर को प्रदर्शित करती है। विशेष रूप से यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि 'ध्रुवस्वामिनी' में अभिव्यक्त नारी–सशक्तिकरण की भावना और अधिकार चैतन्यता क्या आज की नारियों का मार्गदर्शन करने में सक्षम है?

संकेत शब्द:– नारी सशक्तिकरण, अधिकार–चैतन्य, आत्ममंथन, सामाजिक–परिस्थितियाँ, आत्मोन्नयन, विश्वपरिवर्तन।

इन्द्रा सिंह
बी0 ए0–तृतीय वर्ष (2012–2015), **हिन्दी (प्रतिष्ठा),**
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अनुपमा
बी0 ए0–तृतीय वर्ष (2012–2015), **हिन्दी (प्रतिष्ठा),**
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

प्रियंका कुमारी
बी0 ए0–तृतीय वर्ष (2012–2015), **हिन्दी (प्रतिष्ठा),**
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर–सह–अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, **बिहार, भारत**

भूमिका :

"भगवान ने स्त्रियों को उत्पन्न करके ही अधिकारों से वंचित नहीं किया है किन्तु तुमलोगों की दस्युवृत्ति ने उसे लूटा है।"

"मैं उपहार में देने की वस्तु, शीतल मणि नहीं हूँ। मुझमें रक्त की तरल लालिमा है मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्मसम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करुँगी।" (प्रसाद, 2011, 24, 25 **)**

" 'ध्रुवस्वामिनी' का आधार इतिहास भले हो पर उसमें नारी–चेतना और इक्कीसवीं सदी में प्रचलित हो चले शब्द स्त्री–विमर्श की पुख्ता नींव है, पर अश्लीलता से परे।" (शर्मा, 2002,7)

"प्रसाद का साहित्य इसका प्रमाण है कि उन्होंने अपनी परंपरा को ग्रहण जड़ रूप में नहीं किया है। उन्होंने परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप उसका समायोजना किया है; क्योंकि वह समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप अपने को संशोधित परिवर्तित कर ही जीवित रह सकती है।" (झा, 2000, 194)

नाटक को मानव समाज की प्रकृति माना जाता है। नाटककार अपने नाटक में समाज का जीता-जागता चित्र उपस्थित करना चाहता है, जिसमें समाज की उन्नत और अवनत अवस्था पूरी तरह प्रतिबिंबित हो सके। प्रत्येक नाटककार का एक उद्देश्य हुआ करता है, एक लक्ष्य होता है और वह उसी चरम अभीष्ट पर पहुँचने का प्रयत्न करता है। साहित्य का समाज कल्याण के साथ जो संबंध है, वह नाटक में सबसे अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। यह बात निर्विवाद सत्य है कि साहित्यकार सदैव अपने समय से आगे रहता है। जो रचनाकार वर्त्तमान के रंगमंच पर अतीत की पृष्ठभूमि के सहयोग से वर्त्तमान एवं भविष्य की भावनाओं को, अवस्थाओं एवं समस्याओं को प्रदर्शित करते हुए उसका विश्लेषण करता है, वही प्रतिभावान होता है और उसकी प्रतिभा चिरयुगीन होती है। उपर्युक्त बातें जयशंकर प्रसाद पर अक्षरश: चरितार्थ होती हैं।

जयशंकर प्रसाद नारी-महिमा के आख्याता कलाकार थे। उन्होंने अपने समय में नारी की दलित, उपेक्षित दशा देखी थी, पुरुषों की दासता की बेड़ियों में जकड़ी हुई नारी की व्यथा का अनुभव किया था। उस दशा से नारी को मुक्ति दिलाने के लिए उनके भीतर अकुलाहट थी। इस अकुलाहटपूर्ण आत्ममंथन से जो नवनीत नि:सृत हुआ, वही है- नाटक 'ध्रुवस्वामिनी'।

'ध्रुवस्वामिनी' की संक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है :- ध्रुवस्वामिनी अंतरात्मा से चन्द्रगुप्त से प्रेम करते हुए भी सामाजिक मर्यादा का निर्वाह करती है, किन्तु कायर पति रामगुप्त जब उसकी रक्षा से पल्ला झाड़ लेता है, तब उसके समक्ष भविष्य और सतीत्व व अस्तित्व रक्षा की समस्या उपस्थित हो जाती है। उसका शाश्वत् नारीत्व जागृत हो उठता है और जब वह आत्महत्या करने की अभिलाषा करती है तो उस संकटापन्न क्षण में चन्द्रगुप्त उसकी रक्षा करने के साथ-साथ शकराज को द्वन्द्व-युद्ध में पराजित कर उसकी हत्या कर डालता है। विजयोपरान्त रामगुप्त अपनी परित्यक्ता पत्नी पर अपना पतिपन जताते हुए प्राप्त उपलब्धि (विजय) में अपना अधिकार लेने शिविर पहुँच जाता है लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। ध्रुवस्वामिनी में अपने अधिकारों के लिए आवाज बुलंद करने का हौसला आ चुका होता है और चन्द्रगुप्त को अधिकार एवं कर्त्तव्य की सही परिभाषा का ज्ञान हो चुका होता है। इस शुभकार्य में बहन मंदाकिनी, पुरोहित, प्रजा, सामंतगण, परिषद् और सैनिक वर्ग सभी का भरपूर सहयोग चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी को मिलता है। अंतत: ध्रुवस्वामिनी का पुनर्विवाह चन्द्रगुप्त के साथ हो जाता है। इस नाटक में कोमा और शकराज की प्रेम-कथा भी समानांतर चलती है। प्रेम और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा होते हुए भी वह शकराज जैसे कपटी, दम्भी को निष्कलुष भाव से अपना हृदय अर्पण कर बैठी है किन्तु प्रतिदान में उसे अथाह वेदना ही मिलती है।

आज से सत्तर-अस्सी वर्ष पूर्व स्त्री को केन्द्र में रखकर एक नाटक की सृष्टि करना निश्चय ही अदम्य साहस का कार्य था। इस पुरुष-प्रधान समाज में प्राचीन काल से ही ऐसा-सहित्य सृजित किया गया, जिसमें नायकों का प्रशस्ति- गान था। ऐसी सामाजिक और साहित्यिक परिस्थिति में प्रसाद जी ने लीक से हटकर अपने सुप्रसिद्ध नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' की रचना की और उसका नामकरण भी नायिका के नाम पर किया तथा नाटक के केन्द्र में भी नारी-समस्या को रखा। 'ध्रुवस्वामिनी' ऐतिहासिक आवरण में लिपटी हुई एक आधुनिकतावादी रचना है, जिसमें नारी की मुक्ति (तलाक) एवं पुनर्विवाह की समस्या का औचित्य निरूपित किया है।

साहित्यकार युग-द्रष्टा के साथ-साथ युग-स्रष्टा भी होता है। एक युग-स्रष्टा होने के नाते प्रसाद जी एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जिसमें नारी अनुगामिनी न होकर सहगामिनी के स्थान को प्राप्त कर सके और इस पथ पर अगर उसे संघर्ष का भी सामना करना पड़े तो अपने अधिकार हेतु वह डटकर सामना करे। प्रसाद जी स्त्री-वर्ग को अधिकार-चैतन्य बनाना चाहते हैं, यही कारण है कि एक विलासी और भीरु पति के विरुद्ध विद्रोह करने वाली एक संघर्षरत तेजस्विनी वीरांगना ध्रुवस्वामिनी को अतीत के गर्भ से ढूँढ निकाला। नायिका 'ध्रुवस्वामिनी' उन पुरुषों को फटकारती है, जो स्त्रियों को अपनी सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने को अभ्यस्त बन गये हैं :-

"पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है, वह मेरे साथ नहीं चल सकता।" (प्रसाद, २०११, २३)

उन्होंने अपने पात्र 'ध्रुवस्वामिनी' के माध्यम से समाज के समक्ष महिला जगत की अनसुलझी समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है साथ ही नारी को अपने अधिकार के प्रति जागरुक बनाने का प्रयास किया है। ध्रुवस्वामिनी और कोमा जैसे चरित्र का चित्रण कर प्रसाद ने नारी के पारंपरिक और आधुनिक दोनों रूपों को प्रस्तुत किया है। साथ में समाज के सामने नारी के जीवन-मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास भी किया है। समता को जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में संवैधानिक मान्यता होने के बावजूद प्रगतिशील भारतीय लोकतंत्र के इस शिक्षित और आधुनिक युग में भी नारी को समाज द्वारा समानता का अधिकार नहीं दिया गया है। सिद्धांत और व्यवहार में यह विरोधाभास चिंता का विषय है। आज भी हमारे समक्ष कन्या-भ्रूण हत्या से लेकर बलात्कार, दहेज के लिए हत्या, नारी-शोषण जैसी समस्याएँ हैं। पति-पत्नी, भाई-बहन जैसी रिश्तों को कलंकित करने वाली घटनाएँ आज भी हमारे मन-मस्तिष्क को उद्वेलित कर देती हैं। प्रसाद जैसे कालजयी नाटककार ने 'ध्रुवस्वामिनी' में नारी अधिकार का संदेश देने के साथ नारी में अधिकार चैतन्यता, त्याग-भावना, प्रेम, करुणा और कर्त्तव्यपरायणता की जो प्रतिष्ठा की है, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने रचना काल में था।

प्रसाद जी के समकालीन लेखकों में उनके छायावाद के साथी कवियों पंत, निराला ओर महादेवी वर्मा के अतिरिक्त मैथिलीशरण गुप्त और प्रेमचंद विशेष उल्लेखनीय हैं।

निराला जी की 'विधवा' और 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी रचनाओं में नारी के शोषित और प्रताड़ित रूप का चित्रण मिलता है। महदेवी वर्मा ने भी अपने रेखाचित्रों और संस्मरणों में नारी के इन्हीं रूपों के सजीव चित्र प्रस्तुत किए हैं।

नए वैचारिक आंदोलनों तथा वैज्ञानिक युग में तर्क को अधिक महत्त्व दिए जाने के कारण सामाजिक स्तर पर दिशा में तीव्रगति से परिवर्त्तन प्रसाद जी के समकालीन लेखकों की रचनाओं में भी प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होता है। मैथिलीशरण गुप्त ने तो 'साकेत' और 'यशोधरा' के द्वारा हिन्दी साहित्य में नायिकाओं को जो महत्त्व प्रदान किया वह परवर्त्ती रचनाकारों के लिए मार्गदर्शक बना। वस्तुतः उर्मिला और यशोधरा त्याग और तपस्या की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं।

प्रेमचंद ने भारतीय नारी का और उनसे जुड़ी समस्याओं का सजीव, और व्यापक दृष्टि से चित्रण किया है। उनकी दृष्टि में स्त्री पुरुष की सहचरी है, अनुचरी नहीं। उनके नारी पात्रों में मानव सुलभ सभी गुण हैं। उनकी सभी नायिकाएँ जैसे- धनिया, निर्मला, जालपा, सुखदा आदि न देवी हैं न दानवी वरन् सीधे सादे रूप में मानवी हैं।

प्रसाद जी ने नारी जीवन की समस्याओं पर गहनता से विचार किया है। यह भाव 'ध्रुवस्वामिनी' ही नहीं उनके सभी नाटकों में परिलक्षित होता है। 'कामना' में परंपरागत वैवाहिक नियम को सुखद जीवन के लिए अनुपयोगी बताया गया है। नवयुग की अधिकार चैतन्य प्रमदा कहती है- "मैं वैवाहिक जीवन को घृणा की दृष्टि से देखती हूँ।"

नवयुवक की चेतना से प्रभावित नारी-मन के क्षोभ को 'चद्रगुप्त' और 'स्कंदगुप्त' में भी व्यक्त किया गया है। उनकी नायिकाएँ कोमल हैं, भावमयी हैं, एकनिष्ठ प्रेमिका हैं परंतु अबला नहीं हैं- चाहे 'स्कंदगुप्त' की देवसेना हो या 'चन्द्रगुप्त' की कल्याणी।

देवसेना भारतीय नारी का विलक्षण आदर्श प्रस्तुत करती है। वह त्याग और तपस्या की मूर्ति है। उसके चरित्र के द्वारा उन्होंने स्पष्ट किया कि जीवन का एक रूप त्याग और तपस्या का तथा निःस्वार्थ सेवा भाव का भी होता है।

इसी प्रकार 'चंद्रगुप्त' की मालविका अपना बलिदान देकर भी 'चंद्रगुप्त' की रक्षा करती है। 'अजातशत्रु' की मल्लिका भी अपने चारित्रिक उत्कर्ष के कारण आम नारी से बिल्कुल अलग उत्कृष्ट नायिका के रूप में चित्रित हुई है।

इस प्रकार "हिंदी साहित्य में पहली बार ध्रुवस्वामिनी और मंदाकिनी के रूप में नारी व्यवस्था को चुनौती देती नजर आती है। इतना ही नहीं धर्मशास्त्र की समस्त पारम्परिक व्यवस्था को कठघरे में खड़ा करती है और अंततः विजय होती है- नारी मन की, नारी जाति की, स्वच्छंद प्रेम भावना की। वह पुरुष द्वारा बनाई गई कारा से मुक्त हो उठती है।" (शर्मा २००२,८)

- प्रश्नावली के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्रसाद की कृतियों में प्रस्तुत नारी समस्या का समाधान क्या आज भी प्रासंगिक है?

(ख) विशिष्ट

- हिन्दी-साहित्य के पाठक वर्ग की रुचि व विचार को जानना तथा उनके उत्तर के आधार पर साहित्य की प्रासंगिकता और उसके संदर्भ में सामाजिक सोच को सकारात्मक दिशा में विकसित करना।

अध्ययन-पद्धतिः

- प्राथमिक पद्धति- प्रश्नावली तथा साक्षात्कार प्रणाली पद्धति से जो तथ्य उभरे हैं उनका संकलन किया गया।
- सहायक पद्धति- सहायक पद्धति के अंतर्गत पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ और इंटरनेट का प्रयोग किया गया है।

इस परियोजना कार्य के विषय का सर्वेक्षण पटना वीमेंस कॉलेज, मगध महिला कॉलेज, पटना कॉलेज, जे॰ डी॰ वीमेंस कॉलेज की छात्राओं एवं अध्यापक वर्ग, महिला विकास निगम के अधिकारियों, सेविकाओं और गृहिणियों को केन्द्र में रखकर किया गया है। उत्तरदाताओं के विचार को प्रदर्शित कर ग्राफ द्वारा दिखाया गया है।

Graph- 1

प्रश्न 1. ''प्रसाद की ध्रुवस्वामिनी युग-युग से पददलित नारी का प्रतिनिधित्व करती है।'' क्या आप इस

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	25	20	05

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	50%	40%	10%

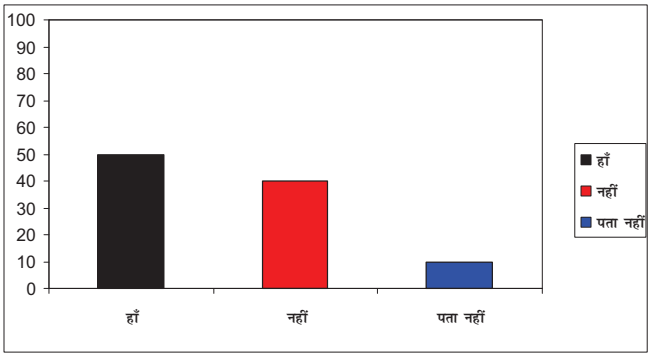

निष्कर्ष :- शत प्रतिशत में से ५०% उत्तरदाता इस मत से सहमत हैं कि ''प्रसाद की ध्रुवस्वामिनी युग-युग से पददलित नारी का प्रतिनिधित्व करती है'', ४०% उत्तरदाता इस मत से असहमत हैं और १०% उत्तरदाताओं को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph- 2

प्रश्न 2. ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'' क्या आप इस कथन से सहमत हैं?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	30	14	06

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	60%	28%	12%

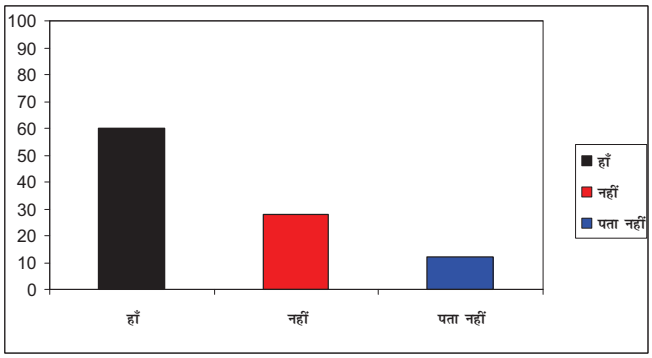

निष्कर्ष :- शत प्रतिशत में से ६०% उत्तरदाता ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''- इस कथन से सहमत हैं, २८% उत्तरदाता इस कथन से असहमत हैं और १२% उत्तरदाताओं को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph- 3

प्रश्न 3. 'ध्रुवस्वामिनी ' में नारी की खोयी अस्मिता और गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया है। क्या आप इस मत से सहमत हैं?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	40	05	05

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	80%	10%	10%

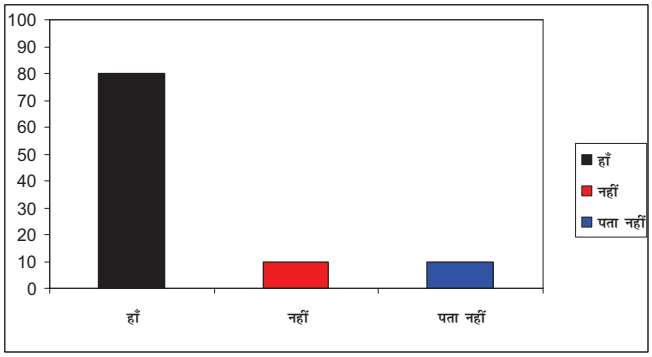

निष्कर्ष :- शत प्रतिशत में से ८०% उत्तरदाताओं का मानना है कि 'ध्रुवस्वामिनी' में नारी की खोयी अस्मिता और गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया है जबकि १०% इस बात से सहमत नहीं हैं और १०% उत्तरदाताओं को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph- 4

प्रश्न 4. ''ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल समस्या नारी-समस्या है।'' क्या आप इस मत से सहमत हैं?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	40	08	02

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	80%	16%	4%

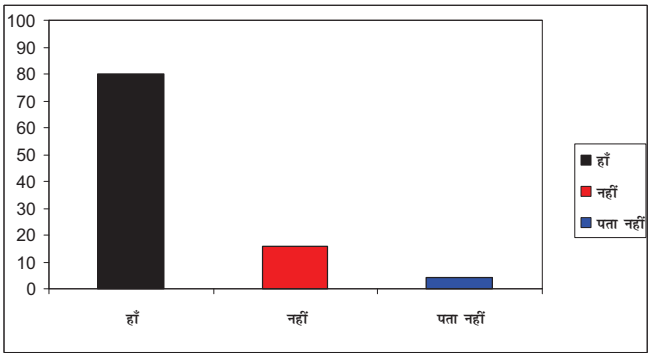

निष्कर्ष :- शत प्रतिशत में से ८०% उत्तरदाताओं ने 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल समस्या नारी-समस्या को माना है, १६% उत्तरदाताओं ने मूल समस्या नारी-समस्या को नहीं माना है और ४% उत्तरदाताओं को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph- 5

प्रश्न 5. स्त्रियों के पुनर्विवाह को प्रसाद जी ने ध्रुवस्वामिनी में समर्थन दिया है? क्या आप इस कथन से

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	42	05	03

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	84%	10%	6%

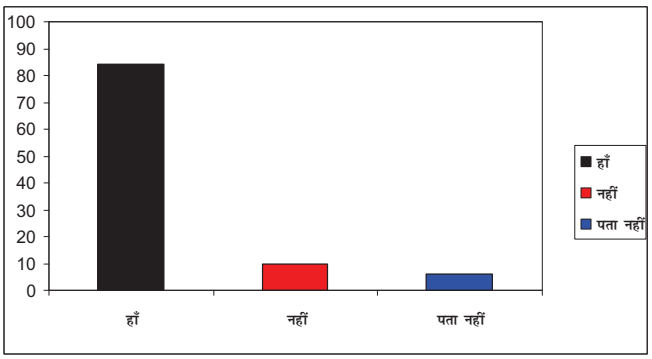

निष्कर्ष :- शत प्रतिशत में से ८४% उत्तरदाताओं ने माना है कि 'ध्रुवस्वामिनी' में स्त्रियों के पुनर्विवाह को प्रसादजी ने समर्थन दिया है, १०% उत्तरदाता इस मत से असहमत है और ६% उत्तरदाताओं को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph- 6

प्रश्न 6. 'ध्रुवस्वामिनी' आधुनिक नारियों का

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	43	05	02

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	86%	10%	4%

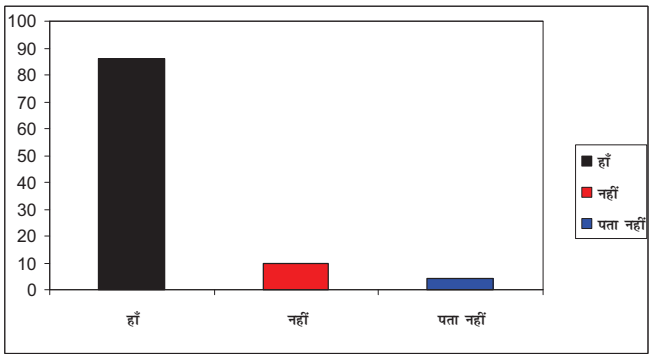

निष्कर्ष :- शत प्रतिशत उत्तरदाताओं में से ८६% उत्तरदाताओं ने इस बात को माना है कि 'ध्रुवस्वामिनी' आधुनिक नारियों को मार्गदर्शन करने में सक्षम है, जबकि १०% उत्तरदाताओं ने इसे नहीं माना है और ४% उत्तरदाताओं को इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।

Graph- 7

प्रश्न 7. जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ स्त्री-विमर्श की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है?

कुल अंक	हाँ	नहीं	पता नहीं
50	30	10	10

कुल %	हाँ	नहीं	पता नहीं
100%	60%	20%	20%

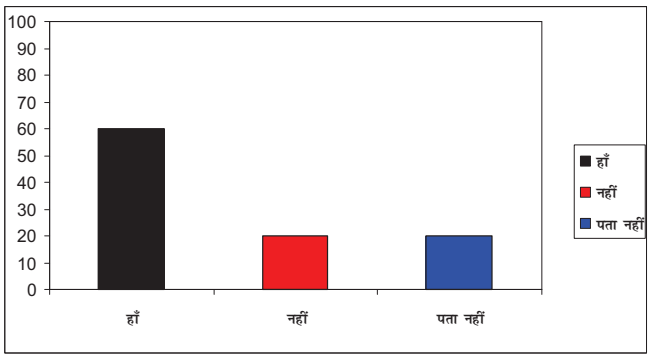

निष्कर्ष :- शत प्रतिशत में से ६०% उत्तरदाता जयशंकर प्रसाद की रचनाओं को स्त्री- विमर्श की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानते है, २०% उत्तरदाता इस मत से असहमत हैं और २०% उत्तरदाताओं को इसकी कोई जानकारी नहीं है।

Graph- 8

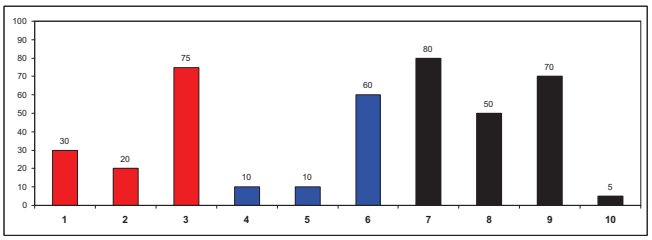

१. अखबार ४. रेडियो ७. वर्ग-अध्याय
२. पत्र-पत्रिका ५. दूरदर्शन ८. मित्र-मंडली
३. पुस्तकालय ६. इंटरनेट ९. स्वाध्याय
१ ० .
सेमिनार-कार्यशाला

प्रस्तुत ग्राफ में हमने दृष्य माध्यम, श्रव्य माध्यम, मुद्रित माध्यम के स्रोतों से सहयोग को प्रदर्शित किया है। इन तीनों माध्यमों से प्रसाद की 'ध्रुवस्वामिनी' में वर्णित नारी- भावना से संबंधित जानकारियाँ निरंतर प्राप्त हो रही हैं, जिससे स्पष्ट परिलक्षित होता है कि आधुनिक पाठक वर्ग में भी ध्रुवस्वमिनी की प्रासंगिकता बनी हुई है। रेडियो, इंटरनेट, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिका, अखबार इत्यादि जयशंकर प्रसाद की लोकप्रियता के परिचायक हैं।

निष्कर्ष :

इतिहास, राजनीति, समाज, धर्म और व्यक्तिगत चरित्रों में पराधीनता और उसके बने रहने की खोज प्रसाद ने एक साथ की है। उनके जैसी सामाजिक और गहन सोच उस समय के यथार्थवादी रचनाओं में भी दुर्लभ है। प्रसाद-साहित्य में भारत के आलोचनात्मक यथार्थ-चिंतन की परंपरा बहुत सार्थकता से उतरी है। धार्मिक और सामाजिक पाखंड, टेकवादी संस्कृति पर प्रहार मनुष्य की अत्यंत पतनोन्मुख अवस्था और उस पर रोज़, उससे सक्रिय संघर्ष प्रसाद-साहित्य में जगह-जगह व्यक्त हुआ है। स्वच्छंद-प्रेम, विधवा-विवाह, तलाक-प्रथा, अंतर्जातीय विवाह का भी समर्थन इनके साहित्य में देखने को मिलता है।

स्त्री और पुरुष जीवन रूपी रथ के दो पहिए हैं। समाज और साहित्य में भी नारी समान महत्त्व की अधिकारिणी है। हमारे भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को देवी के समान पूजा जाता है और ऐसा भी माना जाता है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा नहीं होती, उन्हें पर्याप्त सम्मान नहीं मिलता, जहाँ वो दु:खी रहती हैं वहाँ उन्नति की आशा कभी नहीं की जा सकती है, किन्तु दु:ख की बात तो यह है कि नारी जीवन के लिए जितनी महत्वपूर्ण है उतनी ही जीवन में उपेक्षित भी। प्रसाद ने अपने साहित्य में नारी के सम्मान को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। उनके नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' का नामकरण नायिका के नाम पर होना प्रसाद के इसी दृष्टि का स्पष्ट परिचायक है। आज नारी-सशक्तिकरण के इस दौर में प्रसाद का सम्पूर्ण साहित्य सार्थक एवं प्रासंगिक है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी के हक के लिए आवाज उठायी। अंतत: यह कहा जा सकता है कि प्रसाद-साहित्य में व्यक्त उनकी नारी-भावना, नारी उत्थान की दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

प्रसाद की नारी पात्र नारी होकर भी अबला नहीं अपितु क्रांतिकारी है। वह अपने अस्तिव को जानती है, पहचानती है, तभी तो उसके समक्ष जब भी जटिल परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, तो वह उससे घबड़ाती नहीं है, अपने ऊपर किये गये अत्याचार को सहती नहीं है, प्रत्युत उससे जूझती है, संघर्ष करती है और उस पर विजय प्राप्त करने का भरपूर प्रयास भी करती है। इन स्त्रियों में प्रतिकूल स्थिति को भी अनुकूल बना लेने की अद्‌भुत क्षमता है।

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आरंभ से ही तत्कालीन राजव्यवस्था की कमजोरियों, उनके संचालन में होने वाले चक्रों-कुचक्रों एवं षड्‌यंत्रों जैसी समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है साथ ही साथ राष्ट्रीय जागृति और भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा भी प्रस्तुत की गयी

है। हमारे भारत भू के धूल में सिर्फ वीर ही नहीं वीरांगनाएँ भी जन्म लेती हैं। यहाँ की हर नारी आत्माभिमानी है। वह आत्मरक्षार्थ ही नहीं राष्ट्ररक्षार्थ भी अपने प्राण त्यागने को तत्पर रहती है। गंधर्वसेन की पुत्री और समुद्रगुप्त की पुत्रवधू होने के कारण ध्रुवस्वामिनी को विरासत में ही वीरता प्राप्त हुई है। रामगुप्त पराक्रम से हीन स्वाभिमान से च्युत, आचरण से भ्रष्ट, चुनौतियों से घबराने वाला अकर्मण्य एवं नपुंसक राजा है। सम्राट का कर्त्तव्य से च्युत होना ही राष्ट्र के अहित में है। रामगुप्त से मुक्ति न सिर्फ ध्रुवस्वामिनी के हित में है बल्कि राष्ट्र के हित में भी है। यही कारण है कि अपने कायर एवं क्लीव पति का परित्याग कर राष्ट्र रक्षा की बागडोर अपने हाथों में लेते हुए ध्रुवस्वामिनी अपने प्राणों की आहुति देने को तत्पर हो जाती है।

अपने पात्र ध्रुवस्वामिनी के माध्यम से न केवल समाजिक व्यवस्था के प्रति स्त्री के मन में चल रहे विरोध के स्वरों को प्रस्फुटित किया है बल्कि उसके भीतर व्याप्त राष्ट्र-प्रेम की भावना को भी उजागर किया है। इस नाटक में प्रसाद जी द्वारा नारियों में आत्मसम्मान की भावना को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत नाटक में वे स्त्रियों के बारे में जो कुछ कहते हैं, वह एक तरह से भारतीय समाज के प्रति उनका बयान है। प्रसाद की रचनाएँ शोषित व दमित नारी को क्रांति का नया इतिहास रचने की प्रेरणा देती हैं। स्वामी विवेकानन्द की सोच थी कि नारी पर अत्याचार एवं शोषण की पटकथा तभी तक लिखी जा सकी, जब तक वह अपने सहनशीलता एवं धैर्य की चादर ओढ़े रखी। जिस दिन वह इस चादर को उतार फेकेंगी, तब उसे कोई रोक नहीं सकता है। उनके अनुसार नारी की इस समस्या का एकमात्र समाधान है कि उसे उसके स्वरूप से परिचित करा दिया जाए। जब तक नारी की प्रगति नहीं होगी तब तक समाज एवं राष्ट्र की विकास की संकल्पना एक कल्पना ही सिद्ध होगी।

प्रसाद न केवल बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार हैं, बल्कि आधुनिक युग की प्रवृत्तियों के व्याख्याता भी हैं। उनकी सहित्यिक चेतना मूलतः मानवतावादी भावना पर आधारित है। उन्होंने रूढ़ियों में आबद्ध व्यक्तिवादी भावना को क्रांति के पथ पर डाला और संकीर्णता से उठकर नारी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण अपनाया।

प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं में नारी-समस्या के विभिन्न पक्षों- विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा आदि को व्यापक धरातल पर जाँचने-परखने का काम किया।

प्रसाद की नारी भीरू नहीं होती चाहे वह 'स्कंदगुप्त' की देवसेना हो या विजया 'आकाशदीप' की चंपा अथवा 'पुरस्कार' की 'मधूलिका' उन्हें जीवन की विषम परिस्थितियों से होकर गुजरने तथा उनसे प्रतिद्वन्द्विता लगाने की चाह होती है। वे सभी जीवन की गुत्थियों से जूझती सुलझाती हुई चित्रित की गई हैं। उनकी नायिकाएँ सौदर्य, प्रेम, क्षमा, लज्जा, शील और उत्सर्ग जैसे नारी सुलभ गुणों की खान तो हैं ही, अपने अदम्य आत्मबल के कारण अपराजिता भी हैं।

उनकी भिन्न-भिन्न कृतियों/नाटकों की नायिकाएँ एक ही आदर्श की अनेक रूप प्रतिमाएँ हैं, जो विशिष्ट व्यक्तित्व में भिन्न होते हुए भी प्राणवत्ता और गरिमा की दृष्टि से एक हैं।

बौद्ध दर्शन के प्रभाव से प्राप्त करूणा भावना लगभग सभी नारी पात्रों के जीवन में व्याप्त होकर उन्हें एक धरात्तल पर प्रतिष्ठित करती हैं। उनकी नारियाँ कभी पुरुष को पतन की ओर नहीं ले जातीं बल्कि पुरुषों को कर्तव्य-बोध कराते हुए प्रेरणा प्रदान करती हैं। कोमल नारी हृदय की माधुरिमा में अंतर्द्वन्द्व तथा प्रतिहिंसा की उद्भावना कर कठोरता का प्रकटीकरण प्रसाद की कला की विशिष्टता है। यही कारण है कि उनके नारी पात्रों का स्वरूप इस कसौटी पर कसकर नितांत नवीन, अत्यंत आकर्षक और सजीव बन पड़ा है।

आज की नारी वह अबला नहीं है, जो निरंतर अश्रु बहाती रहे। वह प्रसाद जी की ध्रुवस्वामिनी है, जिसकी

संदर्भ-स्रोत:

आधार ग्रंथ: स्रोत :

प्रसाद, जयशंकर (२०११). ध्रुवस्वामिनी, प्रिन्टेक सिस्टम्स, पटना

संदर्भ ग्रंथ सूची :

'श्याम', डॉ0 सीताराम झा (१९७४). हिन्दी नाटक समाजशास्त्रीय अध्ययन, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना ।

प्रसाद, डॉ0 दिनेश्वर (२००१). प्रसाद की साहित्य दृष्टि, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना ।

शर्मा, रत्ना (१९८५). प्रसाद साहित्य में मानवीय संबंध, बिहार ग्रन्थ कुटीर, पटना ।

शर्मा, डॉ0 राजमणि (२००२). प्रसाद का गद्य साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

शर्मा, जगन्नाथ प्रसाद (२००५). प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

श्रोत्रिय, प्रभाकर (२००४). जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ।

इन्टरनेट :

www.wikepedia.com
www.gadyakosh.com